

## कषाय और समभाव

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आत्म विज्ञान दृष्टि विज्ञान है। मानव की दृष्टि जब जड़ पदार्थ पर होती है तो वह भौतिकतावादी बन जाता है। जब उसकी दृष्टि चेतन में लगती है तो उसे आत्म तत्व का ज्ञान होता है। कषाय और समभाव नदी के दो तट हैं। एक तट कषाय का है और दूसरा समभाव का है। दोनों भिन्न-भिन्न हैं। भौतिक शरीर में अनेक तत्व हैं। इसमें सकारात्मक और नकारात्मक विचार आते-जाते रहते हैं। सकारात्मक विचार समभाव है, नकारात्मक विचार कषाय है। क्रोध, मान, माया, लोभ, राग-द्वेष कषाय हैं। कषाय जीवन को कसता है। इसके कारण बुरे विचार मन में आते रहते हैं।

समत्त्व की साधना एक ऐसा विषय है जहां सभी प्रकार के भेदभाव समाप्त हो जाते हैं। समत्त्व का अर्थ है समताभाव। जब हम स्वभाव में रहते हैं तो समत्त्व भाव दिखाई देता है। जब विभाव में रहते हैं तो विषमता दिखाई देती है। भारतीय संस्कृति में स्थित प्रज्ञ के विषय में कहा गया है कि जो व्यक्ति स्थित प्रज्ञ होता है उसकी प्रज्ञा जागृत हो जाती है। स्थित प्रज्ञ सभी परिस्थितियों में समान रहता है। समत्त्व की साधना सामंजस्य की साधना है। सहनशीलता की साधना है। यह प्रज्ञा का स्तर है। प्रज्ञा आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है। गीता में समत्त्व को योग कहा गया है। योग चित्त की वृत्तियों का निरोध है। चित्त की वृत्तियों के निरोध से चित्त निर्मल हो जाता है। मन में जितनी भी ग्रन्थियां हैं वे सभी समाप्त हो जाती हैं।

कषाय को समत्त्व भाव से जीता जाता है। भगवान महावीर ने जीवन समत्त्व भाव की साधना की थी। इसीलिए उन्हें महावीर कहा जाता है। उन्होंने सभी प्राणियों के प्रति समता का भाव धारण किया। जीवन में अनेक कष्टों को समभाव से सहन किया। अनेक उपसर्गों को सहने के बाद भी वे विचलित नहीं हुए, उनका समताभाव ही पुष्ट हुआ। समताभाव शत्रु को भी मित्र बना देता है। समता से ऊर्जा प्राप्त होती है। राग-द्वेष समाप्त हो जाता है। दोषों की सफाई समताभाव से हो जाती है। आत्मा की शुद्धता समताभाव से बढ़ती है। सामाजिक संदर्भों में

समाताभाव का बहुत महत्व है। समताभाव से व्यक्ति मनुष्य से भगवान बन सकता है। मानव जीवन में समता का बहुत अधिक महत्व है।

समता एक ऐसा तत्व है जहां पर सभी प्रकार का भेदभाव मिट जाता है। यह जीवन का सर्वोच्च आदर्श है। भारतीय ऋषि मुनियों ने समत्व पूर्ण जीवन जीकर समाज के सामने एक उच्च आदर्श प्रस्तुत किया। ऋषि वह होता है जो समत्वपूर्ण जीवन स्वयं जीता है और दूसरों को भी वैसा जीवन जीने की प्रेरणा देता है। इसीलिए ऋषियों को ज्ञाता और द्रष्टा कहा जाता है। समत्वपूर्ण जीवन का अर्थ है अच्छी सोच, अच्छा विचार, अच्छा चिंतन, रचनात्मक और विधेयात्मक विचार। हम दूसरों के प्रति कैसा सोचते हैं, यह बहुत ही महत्वपूर्ण चीज है। विचार के साथ मानस से जो तरंगे निकलती हैं वह भी व्यक्ति को प्रभावित करती है।

हमारे संसार में विचार विनिमय के साधन हैं मन, वाणी और शरीर। मन के द्वारा आदमी चिंतन करता है, वचन के द्वारा चिंतन को व्यवहार में लाता है और शरीर के द्वारा उसका क्रियान्वयन करता है। जब हम किसी अनजान व्यक्ति को अन्धे को, लूले को, लंगड़े को जिससे की हमारा कोई परिचय नहीं है, आदर के साथ उसको उसका मार्ग दिखलाते हैं, या उसके साथ सद्भावना पूर्वक बात करते हैं तो उसको भी अच्छा लगता है और आत्मीयता प्रतीत होती है। मन, वाणी और शरीर का संयम समता को व्यक्त करता है। समता एक रचनात्मक भावना है। समता में सहनशीलता का गुण होना चाहिए। समता मानव का सबसे बड़ा गुण है। जिस मानव के अंदर यह गुण रहता है वह महान कहलाता है। जो व्यक्ति जितना सहन करके चलता है उसका चरित्र उतना ही ऊंचा होता है। चरित्र वह हीरा है जो टूटकर जुड़ता नहीं।

चरित्र निर्माण मानव की स्वाधीन प्रक्रिया है। चरित्र ही ऐसा है जिसे मानव निर्मल बना सकता है। यह उसके अपने अधिकार का विषय है। चरित्र निर्माण के संबंध में पहली आवश्यकता है, व्यक्ति अपनी आत्म-शक्ति को पहचाने। उसके अंदर एक अनंत शक्ति का स्रोत निरंतर प्रवाहित है, इस ध्रुव सत्य को आत्मसात कर लिया जाए। ध्यान धारणा द्वारा अपने-आपको अंतर पुष्ट करने की एक प्रबल आवश्यकता है। भौतिक सुख-दुःख का मानव-जीवन में कोई स्थान नहीं। मानव की सम्पूर्ण चर्या आध्यात्मिक गुणों से परिपूर्ण होनी चाहिए।

जिसने संयम, समता और सद्भावना के मार्ग को स्वीकार कर लिया है, उसके जीवन में कठोर और मृदु संवेदनों का आना आवश्यक है। संयम के कठोर मार्ग पर चलने वाले साधक के जीवन में परीषहों का आना स्वाभाविक है, क्योंकि साधक का जीवन चारित्र की मर्यादाओं से बधा है। मर्यादाओं के पालन से मानव जीवन की सुरक्षा होती है। मर्यादाओं का पालन करते समय संयममार्ग से च्युत करने वाले कष्ट एवं संकट ही मानव की कसौटी हैं। इसलिये उन कष्टों को समभाव और सद्भावना से सहन कर वह अपने आचार का पालन करे। साधक के लिये कषाय बाधक है साधक नहीं।